तेलुगु माओवादियों का असली चेहरा - रक्षक ही भक्षक

मेरे आदिवासी भाइयों और बहनो। कब तक अपने भोलेपन का ये बाहरी तेलुगु माओवादियों को फायदा उठाने दोगे। ये कभी हमे अपना नहीं मानेंगे चाहे हम इनके लिए कुछ भी कर दे। आज तक इन्होंने हमारे लिए किया क्या है? माओवादी प्रवक्ता अभय का ये पम्फ्लेट तो आप सभी ने देखा ही होगा

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति 10 अगस्त, 2021

पेरू कम्युनिस्ट पार्टी के वरिष्ठ नेता कॉमरेड् अबिमल गुज़मैन उर्फ़ गोंजालो को बेहतरीन चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने और उन्हें तुरंत रिहा करने की मांग को लेकर 'सेव कॉमरेड् गोंजालो' अभियान चलाएं!

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी दुनिया और देश की उत्पीड़ित जनता व राष्ट्रीयताओं,

कौन है ये गोन्जालो ? कोई गाँव है या देश है पेरु? शायद ही कुछ लोग जानते होंगे। दूर देश में बैठा एक अजनबी !!! फिर भी ये तेलुगु माओवादियों को गोन्जालो के चिकित्सा की, उसकी रिहाई की चिंता है। और हम, बस्तर के आदिवासी जो पूरे परिवार सहित इनके लिए पुलिस से भिड़ने को तैयार रहते हैं, इनके लिए गोली खाते हैं, हमारे लिए क्यू चिंता नहीं करते ? क्या हम पर दया नहीं आती? आज तक इन्होंने जेल में बंद आदिवासी के रिहाई के लिए क्या किया है? कोरोना जैसे महामारी में बिना इलाज के हम आदिवासी मरते रहे पर इन्होंने इलाज नहीं करवाने दिया, वैक्सीन नहीं लगने दी। और इन्हें दूर देश में बंद गोन्जालो के लिए रिहाई अभियान चलाना है। जब इन्हें हमारी जान की चिंता नहीं तो ये क्या हमारे जल जंगल जमीन की रक्षा करेंगे.

हम भोले हैं पर बेवकूफ़ नहीं जो अभी भी समझ नहीं पाए कि ये हमारा सिर्फ शोषण कर रहे हैं। इन्हें हमारी नहीं, बड़े अमीर नेताओ की चिंता है। मुठभेड़ में गोली खाए - बस्तर का आदिवासी और पार्टी में ऊँचे पद पर तेलुगु माओवादी। सोचिए आज तक बस्तर का आदिवासी क्यू इनका CCM नहीं बना? तेलुगु माओवादी सरेन्डर करे तो उन्हें फूल माला पहनाते है, और आदिवासी सरेन्डर करे तो उसे गोली मार देते हैं। रमन्ना के बेटे के सरेन्डर के बाद भी माओवादी प्रवक्ता अभय ने उसके खिलाफ कोई पैमप्लेट क्यू नहीं निकाला? ये है इनका न्याय !!! ये तो शक के आधार पर पूरे परिवार को मार देते हैं, ये क्या हमारी आवाज़ बनेंगे। ये यदि सच में हमारा भला चाहते तो हमारे बच्चो के हाथो में हथियार नहीं पुस्तक देते, स्कूल को तोड़ते नहीं। इनके कारण तो आज भोले भाले आदिवासी का बस्तर नक्सलगढ कहलाने लगा। अब तो अपनी आंखे खोल कर अपने और परायों को समझो.

जय जोहार जय आदिवासी